जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक

ककसाड़

वर्ष 10 अंक 100
जुलाई, 2024
मूल्य : 25/- रुपए

ककसाड़
राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

ISSN 2456-2211

दिल्ली से प्रकाशित

ककसाड़

(जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक)

जुलाई 2024 **वर्ष-10 • अंक-100**

संस्थापना वर्ष 2015

प्रबंध एवं परामर्श संपादक
कुसुमलता सिंह

संपादक
डॉ. राजाराम त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार
फैसल रिजवी, अपूर्वा त्रिपाठी

•

ग्राफिक डिजाईन
रोहित आनंद (लिटिल बर्ड)

• मुख्य कार्यालय एवं रचनाएँ भेजने का पता •

सी-54 रिट्रीट अपार्टमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-110092

फोनः 9968288050, 011-22728461

•

• संपादकीय कार्यालय •

151, डी.एन.के. हर्बल इस्टेट, कोण्डागाँव, छ.ग.-494226

फोनः 9425258105, 07786-242506

ई-मेल : kaksaadeditor@gmail.com
kaksaadoffice@gmail.com

वेबसाइट : www.kaksad.com

मूल्य : **रु. 25** (एक प्रति), वार्षिक : **रु. 350/-** संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक : **रु. 500/-** वार्षिक (विदेश) : **$110** यू.एस. आजीवन व्यक्तिगत : **रु. 3000/-** संस्था : **रु. 5000/-**

संपादन-संचालन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक

दिल्ली से प्रकाशित होने वाली 'ककसाड़' पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

• ककसाड़ से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे • **कुसुमलता सिंह** स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक।

अनुक्रम

दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा पुरस्कृत

4. **संपादकीय**

साक्षात्कार

6. अपनी मौलिक संस्कृति की रक्षा हेतु प्रतिबद्ध है आदिवासी समाज (वरिष्ठ कथाकार वासुदेव के साथ समालोचक अश्विनी कुमार आलोक की बातचीत)

लेख

9. हरित भविष्य की यात्रा और वर्तमान चुनौतियाँ : **तेजराम विद्रोही**
13. प्रेमाख्यानक कथाओं की अंतर-यात्रा... : **डॉ.विभा ठाकुर**
20. बैगा जनजाति के लोक नृत्य : **डॉ. विजय चौरसिया**
25. आदिवासी विकास, एक विवेचना : **डॉ. ब्रह्मदेव शर्मा**

कहानी

30. जोय : **रजनी शर्मा बस्तरिया**
32. आशियाना : **पूजा गुप्ता**

लोक पर्व

28. निमाड़ में डोडबोली अमावस : **कुसुमलता सिंह**

कविता/शेर

36. ऋतु त्यागी 37. कौशल किशोर 39. ट्विंकल तोमर सिंह 40. माधव कौशिक

संस्मरण

11. कनुप्रिया धर्मवीर भारती : **प्रो. संजीव दुबे**

व्यंग्य

41. फँस गया खटाखट के जाल में : **डॉ. पंकज साहा**

लघुकथा

10. फंकी की यादें : **पी.के. राघव**
49. विलेज बालेशटर : **पी.के. राघव**
50. स्टीम इंजिन : **ब्रिजेश कानूनगो**

पुस्तक समीक्षा/ पुस्तक चर्चा

42. गांडा अनुसूचित जाति या जनजाति? : **कुसुमलता सिंह**
44. सन्नाटे में शोर बहुत है : **डॉ. ऋषिपाल धीमान 'ऋषि'**
46. दिनन के फेर : **ताराचंद नादान**
48. ...रुको नहीं पथिक : **राजेन्द्र नागदेव**
24. **क्या है ककसाड़?**
35. **यादें**
47. **कहावतें**

आवरण कलाकृति - द्वारिका परास्ते
(गोंड कलाकार) - भोपाल (म.प्र.)
मो. 93995-88573

संपादकीय

'ककसाड़' का शताब्दी-अंक यानि कि 100-वां अंक आपके हाथों में है। ककसाड़ की टीम के लिए यह नया अंक सिर्फ एक और अंक नहीं है बल्कि एक दशकीय संघर्ष के उपरांत हासिल होने वाली एक अनमोल-ट्रॉफी की तरह है, अथवा एक बेहद कठिन लंबे सफर पर निकले कारवां के लिए एक महत्वपूर्ण मुकाम पर पहुँचने की भांति है। लघु पत्र पत्रिकाओं की अकाल मृत्यु की भयावह दर-90% को देखते हुए इस पत्रिका की निरंतरता कायम रखते हुए 100-वें अंक के मील के पत्थर को छू पाना कई मायनों में महत्वपूर्ण है।

बात अगर ककसाड़ की करें तो, इसने इन दस वर्षों में गैर व्यावसायिकता तथा जनजातीय सरोकारों के प्रति अपनी निशर्त प्रतिबद्धता के साथ ही समकालीन साहित्य, समाज व संस्कृति की पत्रकारिता की है। यही इस पत्रिका की ताकत है और यही इसके विकास और विस्तार में बाधक भी है। वैसे देश में पत्र पत्रिकाओं की कोई कमी नहीं है, एक आकलन के अनुसार देश भर में प्रकाशित होने वाले कुल पत्र-पत्रिकाओं की संख्या लगभग 1,14,820 एक लाख चौदह हजार आठ सौ बीस हैं और इनमें सर्वाधिक संख्या हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की है। हर साल कितनी ही नई पत्र पत्रिकाएं बड़े जोशोखरोश के साथ प्रारंभ होती हैं, पर सबसे दुखद स्थिति यह है कि इनमें से 90% नई पत्र पत्रिकाएं तीन वर्ष की उम्र नहीं देख पाती। उससे पहले ही बंद हो जाती हैं।

भारत में पत्र पत्रिकाओं के नानाविध अलग अलग कारणों से बंद होने की बीमारी कोई नई बीमारी नहीं है इस बीमारी का डीएनए पत्र पत्रिकाओं के प्रकाशन के प्रारंभ-काल से ही चला आ रहा है।

कुछ एकदम शुरुआती उदाहरण पेश करता हूँ।

भारत का पहले समाचार पत्र 'बंगाल गजट' अथवा हिकी-गजट' का प्रकाशन -1780 में जेम्स ऑगस्टस 'हिकी' नामक एक अंग्रेज ने किया था किंतु दुर्भाग्यवश 30 मार्च 1782 को सुप्रीम कोर्ट के एक आदेश से इस बंद करवा दिया गया, इतना ही नहीं बल्कि इसके टाइप जब्त कर लिए गए, ताकि इसका प्रकाशन दोबारा न हो पाए।। प्रसिद्ध समाजसेवी राजाराम मोहन राय द्वारा प्रकाशित भारतीय भाषा की पहली पत्रिका मानी जाने वाली बंगाली भाषा की 'संवाद कौमुदी' का प्रारंभ 1819 में हुआ किंतु पर्याप्त संरक्षण के अभाव व अन्यान्य कारणों से इसे अक्टूबर 1822 में प्रकाशन बंद करना पड़ा।

हिंदी का पहला समाचार पत्र माने जाने वाला पंडित जुगल किशोर शुक्ल द्वारा प्रकाशित संपादित समाचार पत्र 'उदंत मार्तंड' का प्रकाशन 30 मई 1826 को प्रारंभ हुआ किंतु वित्तीय संकट के कारण यह भी मात्र 18 महीने की चल पाया इसे 4 दिसंबर 1827 को बंद कर दिया गया था। आज इसी संदर्भ में 30 मई को देश भर में पत्रकारिता दिवस के रूप में मनाया जाता है। 'उदंत मार्तंड' की अकाल मृत्यु का मुख्य कारण था 'वित्तीय-संकट' जो कि कालांतर में पत्र पत्रिकाओं का लाइलाज संक्रामक रोग बन गया। आज देश की समृद्धि तथा विकास के तमाम गगनचुंबी दावों के बावजूद... 'उदंत मार्तंड' के लगभग 200 साल बीतने के बाद आज भी 90% पत्र पत्रिकाएं वित्तीय संकट के इस असाध्य रोग का सामना नहीं कर पातीं और कुछ अंकों के प्रकाशन के बाद असमय काल कवलित हो जाती हैं। इसके कारण भी अजब-गजब हैं। हिंदी भाषी क्षेत्रों में गंभीर पत्रिकाएं खरीद कर पढ़ने का चलन धीरे-धीरे समाप्त हो चला है। पाश्चात्य की तर्ज पर अब हमारे अभिजात्य वर्ग की भी यह सोच बनी है कि हल्की-फुल्की पत्रिकाएं चाय-काफी की टेबल पर पड़ी मिलें तो उन्हें उलट-पुलट कर देख लिया जाए। सवाल है कि अब बिना मंगाए पत्रिका लोगों की टेबल तक कैसे पहुंचे। जबकि 'कॉफी-टेबल बुक' अभिजात्य धनकुबेरों का शौक है जिसके लिए वह लाखों रुपए कुर्बान कर देते हैं, जबकि इन सार्थक साहित्यिक पत्रिकाओं की वार्षिक सदस्यता कुछेक सौ रुपए मात्र ही होती है।

हमारे साहित्य जगत के संपादक समीक्षक तथा मूर्धन्य लेखक तो यह निर्विवादित रूप से मानकर चलते हैं कि सभी साहित्यिक पत्रिकाओं का यह नैतिक दायित्व है कि वह इन स्वनामधन्य महानुभावों को मुफ्त में अपनी पत्रिका अबाध रूप से नियमित रूप से प्रेषित करें और उसका डाक खर्च भी अपने जेब से अदा किया करें।

अपनी नई पत्रिका के बारे में समीक्षकों लेखकों की राय जानने समझने के लिए यदि आप उन्हें पत्रिका के कुछ अंक पढ़ने हेतु सौजन्य भाव से निशुल्क प्रेषित करते हैं तो जब तक उन्हें निशुल्क पत्रिका मिलते रहती है तब तक तो वह आपकी पत्रिका की तारीफ करते हैं, पर यदि आपने उन्हें निशुल्क पत्रिका भेजना बंद कर दिया तो वो अनायास आपके प्रचंड दुश्मन बन बैठते हैं। फिर तो हर मंच, फोरम में वे आपको फन फैलाए फुफकारते मिलेंगे कि कहीं जरा भी मौका मिले तो वह आपको डस लें। एक उदाहरण से अपनी बात स्पष्ट करता हूँ– कोरोना काल के दरमियान आर्थिक संकट तथा अन्य कारण ों से जब हम लोगों ने मुफ्त भेजी जाने वाली पत्रिकाओं की संख्या में कुछ कटौती का नीतिगत निर्णय लिया तो हमें कई बड़े लेखकों, समीक्षकों के मुखौटा विहीन मुखमंडल देखने को मिले जो कि बेहद ही घिनौने थे।

हमारे सरकारी विज्ञापनों की नीतियाँ भी ऐसी बनी हुई हैं कि इनका दोहन कॉरपोरेट पत्र पत्रिकाएं ही कर सकती हैं। छोटी पत्रिकाओं के लिए तो सरकारी तंत्र के विज्ञापन, अनुदान वगैरह की समस्त योजनाएं दंतविहीन व्यक्ति के लिए सुपारी के पके फल की भांति व्यर्थ हैं।

ऐसी विषम परिस्थितियों में आप जैसे सुधी शुभचिंतक पाठकों व रचनाकारों का स्नेह और विश्वास ही वह पावन पाथेय है, जिसके सहारे आपकी ककसाड़ पत्रिका टाइटरोप वाकर (रस्सी पर नट-नटी जैसा साधते हुए) जैसा यहाँ तक का सफर तय कर पाई हैं।

तमाम दुश्वारियाँ के बावजूद हमने अपने मूल लक्ष्य, जनजातीय सरोकारों के प्रति अपने प्रतिबद्धता में लेशमात्र भी कमी नहीं आने दी, और पत्रिका में परोसी जा रही सामग्री की गुणवत्ता से भी कभी समझौता नहीं किया। फलतः आज देशभर के जनजातीय समाज का जो स्नेह विश्वास तथा सहभागिता हमें हासिल हुई है, उसकी मिसाल मिलना कठिन है।

आप जैसे पाठकों, सुधी रचनाकारों तथा विभिन्न जनजातीय समाज से मिला निश्छल प्यार तथा अर्जित विश्वास ही हमारी अब तक की संचित अनमोल पूंजी है। यही निरंतर आगे बढ़ने का हमारा एक मात्र संबल भी है। हमें आशा है आप सभी सुधी पाठकों और रचनाकारों का सहयोग हमे आगे भी इसी भांति मिलता रहेगा।

ककसाड़ की पूरी टीम ने जी तोड़ मेहनत करके पत्रिका के हर अंक को यादगार बनाने की भरसक कोशिश की है। हम अपने प्रयासों में कहाँ तक सफल हुए हैं यह तो हमें आपके पत्रों तथा संदेशों से ही पता चलेगा। हमें आपके पत्रों संदेशों व सुझावों का सदैव इंतजार रहता है। तो एक बार फिर बारी है अब आपकी...। अगले अंक तक के लिए विदा।

आपका

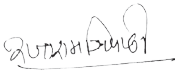

डॉ. राजाराम त्रिपाठी

मो. 94252-58105